ikB 10

झाँसी लक्ष्मीबाई (नाटक)

¼ijns d s ihN s xkus dh vkokt½

बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो,
झाँसी वाली रानी थी।

igyk n`';

(एक सजा हुआ हाथी खड़ा है। उस पर दो बालक बैठे हैं। एक का नाम पेशवा नाना साहब है और दूसरे का राव साहब। सड़क के किनारे एक नटखट बालिका अपने पिता की उँगली पकड़े खड़ी है और हाथी को देख रही है।)

Ukkuk lkgc : ओ छबीली ! हम हाथी पर चढ़कर जा रहे हैं।

euckb : ज़रा ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी। मुझे भी हाथी पर बिठाकर साथ ले चलो।

Ukkuk lkgc : (हँसकर) हम तुझे साथ नहीं ले जाएँगे।

euckb : तुम साथ नहीं ले जाओगे, तो मैं दूसरे हाथी पर चढ़कर आ जाऊँगी।

ukuk lkgc : आ जाना। (हाथी झूमता हुआ चला जाता है)

euckb : पिता जी, हम भी हाथी पर चढ़ेंगे।

Ekkjkir : बेटी मनु ! हमारे पास हाथी कहाँ है ?

euckb : नहीं, मुझे ये सब नहीं सुनना। बस, हमें भी हाथी पर चढ़ाओ। (मचलती है)

ekjkir : मनु ! हमारे भाग्य में हाथी कहाँ ? ज़िद न कर।

euckb : (रौब से) आपको क्या मालूम, मेरे भाग्य में तो दस–दस हाथियों की सवारी लिखी है ?

Ekkjkir : ईश्वर तेरे भाग्य को चार चाँद लगाए और तू दस नहीं, बीसियों हाथियों की स्वामिनी बने।

euckb : (मुस्कुरा कर पिता के गले में अपनी दोनों बाहें डालती हुई) आप देखेंगे, एक दिन ऐसा आएगा जब मेरे पास बीसियों हाथी होंगे, नौकर–चाकर होंगे, खूब धन होगा।

Ekkjkir : अब बहुत बातें मत बना। चल घर चलें।

(दोनों घर की ओर चल देते हैं।)

nljk n';

(एक महल का आँगन 6 से 10 वर्ष के बच्चे आँगन में गुड़िया और गुड्डे का खेल खेल रहे हैं। बच्चों के दो दल बन गए हैं। एक दल कन्या–पक्ष बनता है, दूसरा दल वर–पक्ष। गुड्डे–गुड़िया का विवाह जो करना है! वहीं पास से मनुबाई जा रही है।)

pik : मनु! इधर आना।

euckbl : कहो, क्या कहना चाहती हो ?

pik : हम गुड्डे–गुड़िया का विवाह करेंगे, बाजे बजेंगे, प्रीति–भोज होगा। बताओ, तुम किस ओर शामिल होना चाहोगी ?

euckbl : मैं किसी ओर भी शामिल नहीं होऊँगी। मुझे और कहीं जाना है।

pik : कहाँ ?

euckbl : क्या तुम देख नहीं रही, मेरे हाथ में तलवार है ? मैं आजकल नाना साहब के साथ तलवार चलाना सीख रही हूँ।

pik : अरी, लड़की होकर तुम यह क्या कर रही हो ?

euckbl : ओ भोली चंपा! तुझे क्या मालूम कि पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी शत्रुओं से देश की रक्षा करनी सीखनी चाहिए। इसलिए मैं अस्त्र–शस्त्र चलाना सीख रही हूँ।

l|nj : तो क्या तुम शत्रु के साथ लड़ोगी ?

eu|ckb| : लड़ूँगी ही नहीं, उसे शत्रुता करने का मज़ा भी चखा दूँगी। देखना, एक दिन सारे शत्रु सिर पर पैर रखकर भाग जाएँगे।

l|nj : अरे! तू तो बड़ी बहादुरी की बातें करती है।

eu|ckb| : क्या तूने मुझे यूँ ही समझ रखा है। मैं तो हूँ ही बहादुर।

p|ik : तब तुम जाओ, तुम्हारे–हमारे रास्ते अलग–अलग हैं।

eu|ckb| : जा रही हूँ और कहे देती हूँ कि यदि तुम भी अस्त्र–शस्त्र चलाना सीख लोगी तो अच्छा रहेगा।

(मनुबाई तेज़ी से तलवार घुमाती हुई प्रसन्न मुद्रा में चली जाती है।)

rh l jk n';

(युद्ध का मैदान, एक ओर अंग्रेज़ लैफ्टिनेंट व सेना की टुकड़ी तथा दूसरी ओर लक्ष्मीबाई, नानासाहिब और कुछ अन्य योद्धा दिखाई देते हैं)

l=ekkj – हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में।
इनकी गाथा छोड़ चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मैदानों में।

y{ehckb| : नाना साहब! आप सेना को लेकर बाईं ओर से शत्रुओं पर आक्रमण कीजिए।

ukuk lkgc : तुम कहाँ रहोगी ?

y{ehckb| : आप मेरी चिंता मत करो। जाओ, शत्रु पर टूट पड़ो।

ukuk lkgc : आज शत्रु सावधान है, तुम भी सजग रहना। मैं चलता हूँ।

(प्रस्थान)

y{ehckb| : राव साहब ! आप दाईं ओर से शत्रुओं को घेर लो, किसी शत्रु को जीवित मत छोड़ना।

jko lkgc : आज ऐसा ही होगा। आप चिंता न करें, महारानी।

(प्रस्थान)

lanj : आज तुम दामोदर राव की रक्षा करना और देखना, मेरे शरीर को कोई हाथ न लगा सके। मैं चलती हूँ।

(प्रस्थान)

पर्दे के पीछे से तलवारों की कट–कट की आवाज, ...हाय !..... मरा !..... ओह ! यह रानी है या मौत ! पानी ! पानी ! आह ..... ह ! अरे कोई है ? बचाओ !

तुम्हारी करनी का यही परिणाम है कायर।

(मंच पर मुँह में लगाम और दोनों हाथों में तलवारें लिए रक्त से लथपथ रानी का आगमन)

y{ehckb : सुंदर ! मेरा कर्त्तव्य पूर्ण हुआ। आज तुम दामोदार राव की रक्षा करना.....चलती हूँ अब मुझे सँभालो । आओ, जल्दी आओ ।

lanj : महारानी ! आपकी यह हालत ।

y{ehckb : मेरी प्यारी सखी ! इसे ही वीरगति कहते हैं। यह बड़े भाग्य से मिलती है। मेरी यह बात याद रखना।

(हाथों से तलवारें गिरती हैं।)

lanj : (आगे बढ़कर रानी को अपने हाथों में सँभालती हुई) घबराओ मत, मैं आपके शरीर को किसी शत्रु को छूने नहीं दूँगी।

y{ehckb : मा ..... तृ.....भू.....मि.....की .....जय।

(परदे के पीछे से आवाज आती है)

जाओ रानी याद रखेंगे हम ये कृतज्ञ भारतवासी

यह तेरा बलिदान जगाएगा स्वतंत्रता अविनाशी।

तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी।

खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।

(परदा गिरता है)

अभ्यास

1- vkb,] 'kCnk d vFk tku &

- अस्त्र – फेंककर चलाया जाने वाला हथियार
- शस्त्र – हाथ में लेकर चलाया जाने वाला हथियार
- अमिट – न मिटने वाला
- आक्रमण – हमला
- कृतज्ञ – उपकार को मानने वाला
- मुद्रा – मुख की आकृति
- लथपथ – सना हुआ
- विभक्त – बँटा हुआ
- सजग – सावधान
- स्मारक – यादगार

2- ikB l &

(क) मनु किस बात की जिद कर रही थी?

_____

_____

(ख) पिता द्वारा भाग्य की बात कही जाने पर मनु ने अपने पिता को क्या जवाब दिया?

_____

_____

(ग) मनु ने गुड्डे–गुड़िया के विवाह में सम्मिलित न होने का क्या कारण बताया?

_____

_____

(घ) मनुबाई अस्त्र–शस्त्र चलाना क्यों सीख रही थी?

_____

_____

(ङ) मनुबाई चंपा को क्या सीखने के लिए कहती है, और क्यों?

_____

_____

(च) चंपा और मनुबाई के रास्ते अलग–अलग कैसे थे?

_____

_____

(छ) घायल लक्ष्मीबाई ने सखी सुंदर से क्या कहा?

_____

_____

3- vkidh ckr &

(क) मनु हाथी की सवारी करना चाहती थी। आप किसकी सवारी करना पसंद करेंगे?

(ख) मनु ने घुड़सवारी और तलवारबाज़ी सीखी थी। आप क्या–क्या सीखना चाहते हैं?

(ग) नाना साहब लक्ष्मीबाई को प्यार से 'छबीली' कहकर बुलाते थे। आपको अपने घर में प्यार से किस नाम से बुलाया जाता है ?

4- ikB l vkx &

लक्ष्मीबाई स्वतंत्रता संग्राम में लड़ी थी और कौन–कौन से वीर/वीरांगनाएँ आजादी के लिए लड़ें थे ? उनके बारे में जानें।

5- Hkk"kk dh ckr &

(क) मित्र होने के नाते मैं तुम्हारा शरीर किसी शत्रु को छूने तक नहीं दूँगी।
मित्र शब्द का विलोम है 'शत्रु'। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। उनके विलोम अर्थ वाले शब्द लिखें–

आदर ——————————————

सुख ——————————————

आस्तिक ——————————————

पसंद ——————————————

पूर्व ——————————————

आदि ——————————————

जन्म ——————————————

पुरुष ——————————————

हँसना ——————————————

चढ़ना ——————————————

कृतज्ञ ——————————————

(ख) एक बालिका अपने पिता के साथ खड़ी है।
रोहित रोज रात को दूध पीता है।
वाक्य में firk और ihrk के अर्थ अलग–अलग हैं।
ऐसे ही कुछ मिलते–जुलते शब्द नीचे दिए गए हैं। उनके अर्थ लिखें–

हरि–हरी ————————— —————————

बिन–बीन ————————— —————————

मिल–मील ————————— —————————

आदि–आदी _____ _____

पिला–पीला _____ _____

शिला–शीला _____ _____

(ग) पुरुष शब्द को ध्यान से देखिए। र के साथ (उ) की मात्रा लगाकर रु बना है। सभी अक्षरों में उ और ऊ की मात्रा उनके नीचे लगती है। लेकिन र में ये मात्राएँ बीच में लगती है।

ऐसे ही कुछ शब्द आगे दिए गए हैं। इन्हें बोल–बोलकर लिखें–

रुचि _____ रूमाल _____

रुपया _____ रूस _____

रुई _____ रूखा _____

रुक _____ रूठना _____

गुरु _____ रूप _____

(घ) पाठ में से मुहावरे छाँटकर उन्हें वाक्य में प्रयोग करके लिखें–

1. _____
_____

2. _____
_____

3. _____
_____

4. _____
_____